1857 के गदर से ऐन-पहले दिल्ली के बादशाह बहादुरशाह जफर का सर्वखाप पंचायत को पत्र

"सर्वखाप पंचायत के नेताओ! अपने पहलवानों को लेकर फिरंगी को निकालो। आप में शक्ति है। जनता आपके साथ है। आपके पास योग्य वीर और नेता हैं। शाही कुल में नौजवान लड़के हैं परन्तु इन्होंने कभी युद्ध में बारूद का धुआँ नहीं देखा। आपके जवानों ने अंग्रेजी सेना की शक्ति की कई बार जाँच की है। आजकल यह राजनैतिक बात है के नेता राजघराने का हो। परन्तु राजा और नवाब गिर चुके हैं। इन्होंने अंग्रेजों की गुलामी स्वीकार कर ली है। आप पर देश को अभिमान और भरोसा है। आप आगे बढ़ें। फिरंगी को देश से निकालें। निकालने पर एक दरबार किया जाये और राजपाट स्वयं पंचायत संभाले। मुझे कुछ उजर नहीं होगा।"

इस पत्र को पाकर पंचायत ने अपने शक्ति का संग्रह करना आरम्भ किया और अन्य शक्तियों से सम्पर्क बढ़ाया। हरयाणा सर्वखाप पंचायत के दो भाग किये, जमना-आर और जमना-पार। पंचायत ने दोनों ओर दिल्ली को केन्द्र मानकर मेरठ, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, बुलन्दशहर, बहादुरगढ़, रेवाड़ी, रोहतक और पानीपत में अंग्रेजी सत्ता को उखाड़ फेंका, जिसके कारण भारी कष्ट सहन किये। जनता कोल्हू में पेली गई। जायदाद छीन ली गई। खेद है कि यह जायदाद अब तक नहीं लौटाई गई है।

आन्दोलन के मुख्य नेता यह थे: नाना साहब, तांत्या टोपे, झाँसी की रानी, कुंवरसिंह, अजीमुल्ला, बख्त खाँ पठान, बल्लभगढ़ नरेश नाहर सिंह तेवतिया , पंचायतों के दो नेता चुने गये - नाहरसिंह सूबेदार और हरनामसिंह जमादार (आश्चर्य ना कीजियेगा यदि सर्वखाप के इन योद्धाओं का नाम आप पहली बार सुन रहें हों तो, यही तो अनदेखी और भेदभाव से मनचलों ने व्यक्तिगत द्वेष और विशेष के साथ इतिहास लिखा|)।

परिणाम: जो कुछ परिणाम हुआ, आपको ज्ञात है । आन्दोलन सफल न हो सका ।

विफलता के कारण: यद्यपि सब पेशों और सम्प्रदायों के लोग आन्दोलन में थे । परन्तु शीघ्रता करने से शक्ति संग्रह न हो सका । अंग्रेजों ने फाड़ने की नीति से काम लिया और उनकी सेना नए शस्त्रों से सुसज्जित थी । राजा और नवाबों की शक्ति अलग रही । मराठों में आपसी झगड़े थे । यह कारण सबको ज्ञात है । हमने उन बातों पर ही प्रकाश डाला है जो कि इतिहास के पत्रों पर नहीं लिखी गई ।

Courtesy: Swami Omanand Shastri descendent